International Journal of Applied Research 2019; 5(4): 522-524

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(4): 522-524
www.allresearchjournal.com
Received: 16-02-2019
Accepted: 22-03-2019

रौशन कुमार यादव
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

Corresponding Author:
रौशन कुमार यादव
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

मैथिली साहित्यमे नवताक उद्घोषक राजकमल

रौशन कुमार यादव

सारांश
राजकमल अपन साहित्यमे व्यक्तिगत पक्षक समर्थक रहलाह, जीवनक यथार्थकेर अन्तःपक्ष आ वाह्य पक्षक समर्थक रहलाह आ स्वभाविक रूपसँ सरल भाषामे मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिपर जोर देलनि। आशिल्पक दृष्टिकोणसँ एकटा नूतनताक संग मैथिली कथा लेखन लेल मार्गदर्शक प्रमाणित भेलाह। राजकमलक कथा सभक अवलोकनक उपरान्त ई स्पष्ट देखार होइत अछि जे हिनकामे अभिव्यक्तिक प्रचण्ड खतरा उठेबाक साहसिकता छलनि आ एहि साहसिकताक कारणे ई मैथिली साहित्यमे अपन नामकेँ अमर कयलनि।

प्रस्तावना
राजकमल चौधरी मैथिलीक प्रयोगवादी धाराक यात्रीजीक पश्चात् एकटा पैघ उन्नायक, नव नूतनक प्रयोग करयवला प्रतीक छथि। ओना तऽ आधुनिक मैथिली साहित्यमे राजकमल चौधरीक साहित्य एकटा विवादास्पद विषय सेहो रहल अछि। ओना ई कहल गेल अछि जे जकर जतेक विरोध होइत अछि ओ आबयवला समयमे एकटा सम्भावना बनि सेहो उभरैत अछि। राजकमलोक संबंधमे एहने सन देखल गेल अछि। हिनका साहित्यपर एक दिस हिनका नव साहित्यक व्याख्याता मानि पैघ–पैघ दाबा कयल गेल ते दोसर दिस एहि नव साहित्यकेँ पाश्चात्य साहित्यक अनुकरण छोड़ि आर किछु नहि बूझल गेल। मुदा एहि सभ बातक उपरान्तो एहिमे संदेह करबाक कोनो अवकाश नहि जे यात्रीजीक पश्चात् मैथिली साहित्यमे राजकमल एहन कवि–कथाकार–साहित्यकार भेलाह जे परम्परागत मैथिली रचनाकेँ एकटा ठोकर देलनि।
हिन्दी साहित्यक छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पंतक कहब छनि जे ''प्रयोगवादी साहित्यक निर्झरणी कल–कल छल–छल करैत फ्रायडवादसँ प्रभावित भय स्वप्निल फेनिल स्वर संगीतहीन भावनाक लहरिसँ मुखरित उपचेतन एवं अवचेतनक रूद्ध, क्रुद्ध ग्रन्थिकेँ मुक्त करैत दमित, कुंठित आकांक्षाकेँ वाणी दैत लोकक चेतनाक स्रोतमे नदीक द्वीप सदृश प्रकट भय अपन पृथक अस्तित्वपर आबि गेल अछि।'' [1]
राजकमलक रचना वस्तुतः एकटा प्रयोगवादी रचना अछि, जे फ्रायडसँ प्रभावित अछि। किएक तऽ हिनक सभ रचनामे कमोबेस कामवासनाक चित्रण भेल अछि। अपवादकेँ छोड़ि एहन देखल गेल अछि जे हिनक सभ रचना फ्रायडक मनोविश्लेषणात्मक विचारपर आधारित अछि एवं हिनक रचना सभकेँ एकटा नव प्रयोगवादी साहित्य बुझब समीचिन अछि। कहि सकैत छी जे राजकमल अपन पूर्ववर्ती कथाकारक शिल्प विधानक अनुशरण नहि कऽ नव रीतिएँ विषय–वस्तुक उपस्थापन कयलनि जे मैथिली कथा साहित्यक लेल नव प्रयोग, नव वाद मानल जाइत अछि।
राजकमल अपन कथा सभमे सभ प्रकारक प्रयोग कयलनि। राजकमलक प्रायः सभ कथा प्रयोग रीतिक नवीनता थीक। आ तेँ मैथिलीक प्रकाण्ड समालोचक रमानाथ झा 'ललका पाग' कथा संग्रहक भूमिकामे लिखै छथि जे ''हमर विश्वास अछि जे कवि राजकमलकेँ लोक बिसरी जाएत मुदा कथाकार राजकमल मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे अमर रहताह।'' [2]
राजकमल कथे जकाँ कवितामे नव प्रयोग कयल ओ मैथिली साहित्यमे नवकविताक प्रथम व्याख्या कयलनि आ प्रयोगवादक धाराक सूत्रधार बनलाह। हुनक मान्यता छलनि ''सभसँ पहिने हमर अपन मनुक्ख, माने हम अर्थात् हमर कविताक सभसँ पहिल आ सभसँ महत्वपूर्ण विषय हम स्वयं छी, हम आ हमर अस्तित्व, हम आ हमर अहं हम आ हमर व्याकरण।''[3]
मैथिली साहित्यमे प्रगतिवादी कविक रूपमे राजकमल अपन स्थान अगुआक रखने छथि। किएक तऽ पुरान परम्पराक कविता सभ अदौकालसँ चलि आबि रहल छल जकरा यात्रीजीक बाद राजकमल चौधरी तोड़लनि आ एकटा नव मार्गपर अनलनि। हिनक 'स्वरगंधा' कविता संग्रह मैथिली साहित्यमे

माइल स्टोन सिद्ध भेल अछि। कवितामे ई छन्द–बन्धनके ँ तोड़लनि आ क्रान्तिकारी विचारधाराके ँ अपनबैत अपन 'स्वरगंधा'क भूमिकामे लिखलनि अछि ''हमरा विचारे कविताक लेल आवश्यक नहि जे छन्द, लय, गीतात्मकता, प्रसार विधि, यति प्रणालीके ँ मान्यता देले जाय, कविताक लेल एके वस्तु आवश्यक अछि शब्द, शब्द बिना कविता नहि कयल जा सकैत अछि। कविता गद्य नहि थिक जे शब्दक अतिरिक्त आन कोनो विधान मानि कऽ चलब।''[4]

राजकमल चौधरी अपन क्रान्तिकारी स्वभाव आ प्रगतिवादी विचारधाराक परिचय दैत तत्कालीन कविताक व्यंग्यात्मक परिभाषा दैत कहने छथि–

''कविता आब नहि अछि नायिका भेद,
नख–शिख, सिंगार
कविता नहि अछि रति विपरीतक
उलटल ग्रीवाहार।''[5]

उपर्युक्त पाँतिमे कविताक चलि आबि रहल परम्परापर कसगर चोट कयल गेल अछि। एहिमे प्रगतीवादी विचारधाराक भाव उत्पन्न भेल अछि, संगहि क्रांतिकारी रूप सेहो देखबामे अबैत अछि।

राजकमलक कविता नव–भावभूमिके ँ जतेक सहजतासँ, जतेक विशिष्टताक संग संस्पर्श कयलक, तेहेन हिनक कोनो समकालीन कविमे अवबोध नहि होइत अछि। हँ ई भिन्न अछि जे राजकमल नित्य प्रयोगेक अनुसंधानमे लागल रहैत छलाह, जीवनोके ँ ओ एकटा प्रयोगे मानैत छलाह। राजकमलक आरंभिक पद्यमे मिथिलाक सभ्यता–संस्कृति, धर्म–ईश्वर, अस्मिता, देशक संहिताक प्रति गौरव ओ आस्था व्यक्त भेल अछि। राजकमल एहि सभ बिन्दुपर निधोख रूपसँ अपन कलम चलौने छथि। राजकमलक अनुसार ''1960क उपरान्त आधुनिक कविता मानव–जीवन आ मानवक अन्तः प्रदेशक एक 'नव' क्षेत्रमे प्रवेश कयने अछि। एहिकालसँ पहिने कविताक मूल आ मुख्य विषय छल विद्यापतीय शृंगार आ प्रेमाभिव्यक्ति, प्रकृति–दर्शन, सुधारवाद, आर्थिक वैषम्यक प्रति हाहाकार, पूजा–भावना आ विज्ञान सम्मत नवीनता–विरोध।''[6]

राजकमल चौधरीक साहित्यिक प्रगतिशीलता देखबा लेल हुनकासँ रामानुग्रह झा द्वारा लेल गेल साक्षात्कार दृष्टव्य अछि–

''रा०झा०– मैथिलीक नव कवितापर ई आरोप लगाओल जाइत अछि जे एहिमे अन्यान्य भाषाक साहित्यसँ प्रभावित आ प्रेरित अछि। मैथिलीक नव कविताक काव्यपरम्पराक कवि कोनो रूपमे आगू बढ़यबाक अपन इच्छा नहि राखैत अछि, की मैथिलीक नव कविता अनुकरण मात्र अछि आ परम्परासँ एकर कोनो संबंध अछि?

''राजकमलक उत्तर अछि जे बेगैर नव कविताक पढ़ने लोक एहेन मन्तव्य कोना गढ़ि गेल अछि। ई आश्चर्यक बात अछि। हमरा लोकनि दोसर भाषा आ साहित्यसँ अथवा दोसर काव्य परम्परासँ नहि, मात्र मैथिली काव्य परम्परासँ प्रेरित छी, प्रभावित छी।''[7]

हिनक सभ रचनामे पुरान मान्यता, छुआछूति, बाल–विवाह, बहुविवाह, विधवापर अत्याचार आदिक विरोध भेल अछि जाहिसँ हिनक रचनात्मक प्रभाव आओर प्रखर भेल अछि। राजकमक साहित्यक अध्ययन, चिन्तन, मनन कयला उपरान्त एहेन बुझाइत अछि जे हिनक साहित्यमे बहुतो प्रकार नव–नव धारा सभ प्रवाहित भेल अछि। हिनक साहित्यमे ज्वलन्त समस्या सभपर चोट कयल गेल अछि एहि तरहे ँ देखैत छी जे हिनक साहित्यमे मुख्य रूपसँ भूख, आत्मरक्षा आ यौन पिपासाक चर्चा तऽ अछिये, हिनका साहित्यमे भक्तिस्वरूपक धारा सेहो देखल गेल अछि। भूख, आत्मरक्षा आ यौन–पिपासा, जे हिनक मुख्य रूपसँ साहित्य मध्य आयल अछि, ताहिमे सेहो विभिन्न धारा सभ प्रवाहित अछि। हिनक रचनामे भूखक पूर्ति लेल यौन पिपासाक चित्रण अछि, जाहिमे हिनक यथार्थवादी विचारधारा उभरि कऽ आयल अछि। हिनक 'खरीद–बिक्री' नामक कथा एहि यथार्थसँ ओत–प्रोत अछि। कामवासनाक चित्र देखबैत हिनक प्रायः सभ रचना यथार्थसँ परिचित करबैत अछि। राजकमल 'ललका पाग' सन कथा लिखि मैथिली साहित्यमे अमर छथि। हिनक एहि अमरत्वक पाछाँ तिरुक त्याग अछि। एहिमे मिथिलाक नारीक धैर्यक परिचय देल गेल अछि, जाहिसँ पुरुष प्रधान समाजके ँ यथार्थ बोध कराओल गेल अछि। राजकमलक रचनाक पात्र सभ कतहु अपन अस्तित्वके ँ हीन नहि केलक अछि आ हिनक पात्रक स्वाभिमानी रहैत मार्यादाक सीमाके ँ टपल नहि अछि। ई अपन रचनाके ँ एक युगसँ दोसर युग धरि पहुँचेबाक प्रयास कयलनि अछि जाहिसँ पारम्परिक धारामे परिवर्तन देखबामे अबैत अछि। राजकमलसमाज आ देशक आ मिथिलाक नारिके ँ विवशता देखौलनि अछि आ ओहि विवशताक फलस्वरूप नारीक बेचौत आ बिकाइत चरित्रक संदेश महाकवि विद्यापतिके ँ देलनि अछि। हुनका धरि मिथिलाक जन–जीवनक चित्र पहुँचेबाक प्रयास कयलनि अछि।

राजकमल अपन कविता सभमे क्रान्तिकारी संदेश देलनि अछि। ओ एकटा पुरान परम्पराके ँ तोड़लनि अछि, संगहि एकटा नव परम्पराके ँ स्थापित सेहो कयलनि अछि। ओ कहैत छथि ''कोनो स्थितिमे हम सभ, मैथिलीक आधुनिक कवि, रेशमक व्यापारी नहि छी, जे लोकनि फूसि बाजल छथि, सेहो हमरा सभक रेशम देखि सकैत छथि, आ हमरा सभक कविता बूझि सकैत छथि। हम सभ देवताहीन पुरान मन्दिर तोड़ने की तँ संगहि नव मन्दिर सेहो बना रहल छी।''

एहिमे राजकमलक प्रगतिवादी स्वर मुखरित भेल अछि। एकटा पुरान परम्पराके ँ तोडि, साहित्य मध्य एकटा अराजकताके ँ हटा राजकमल नव परम्परा, नव धाराके ँ प्रारम्भ कयलनि अछि। हुनक कथन अछि जे ''1960 क उपरान्त आधुनिक कविता मानव जीवन आ मानवक अन्तः प्रदेशक एकटा नव क्षेत्रमे प्रवेश कयने अछि। एहि कालसँ पहिने कविताक मूल आ मुख्य विषय छल विद्यापतीय शृंगार आ प्रेमाभिव्यक्ति, प्रकृति–दर्शन, सुधारवाद, आर्थिक वैषम्यक प्रति हाहाकार पूजा भावना आ विज्ञान–सम्मत नवीनता–विरोध।''[9]

राजकमलक कविताक संदर्भमे प्रसिद्ध आलोचक प्रो० रमानाथ झाक मंतव्य अछि जे राजकमल मैथिली साहित्यक प्रयोगवादी काव्यधाराक प्रथम व्याख्याता छथि। हिनक कविताक शब्द–शब्दमे नवीनता झलकैत रहैत अछि, जेहने भाव–वस्तुमे तेहने अभिव्यक्तिमे रहैत अछि।

राजकमलक महत्वपूर्ण उपन्यास सभमे 'आदिकथा' ओ 'आन्दोलन' प्रमुख अछि। 'आदिकथा' व्यक्तिपरक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास थिक। एहि सभ उपन्यासक कथा–वस्तुमे विश्वसनीयता अनबा लेल राजकमल विभिन्न रीतिक अनुशरण कयलनि अछि। नारी अतृप्त वासनाक पूर्तिक लेल अपन संबंध सभके ँ कात कऽ कोना वासनात्मक संबंध स्थापित कऽ लैत अछि, तकर यथार्थ चित्रण एहि सभ उपन्यासमे भेल अछि। एहिमे वृद्ध अनिरुद्ध बाबूक सुशीलाक संग विवाह होइत अछि, किन्तु सुशीलाक अतृप्त वासना ओकरा अपन भागिन देवकान्त दिस आकृष्ट होयबाक लेल बाध्य करैत अछि। उपन्यासक कथा–वस्तुमे सुशीलाक चित्तवृत्तिक सूक्ष्म अध्ययन कयल गेल अछि। वयस जनित अनमेल विाहक दुष्परिणामके ँ उपन्यास मध्य चित्रित कयल गेल अछि। एहि तरहक चित्रण यात्रीक 'पारो', मायानन्द मिश्रक 'बिहाड़ि पात आ पाथर'मे सेहो भेल अछि। यथार्थवादी धाराक उपन्यासक कोटिमे 'आदिकथा' अपन सशक्त उपस्थिति दर्ज करओने अछि। 'आन्दोलन'मे कलकत्तामे रहयवला मैथिली भाषी लोकक दशाके ँ यथार्थ रूपमे चित्रित कयल गेल अछि। राजकमलक 'आदिकथा' उपन्यासमे देहक भूखके ँ यथार्थ रूपमे चित्रण कयल गेल अछि। यथार्थ साहित्य लेल महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि। कारण

साहित्य जीवन सत्य एवं यथार्थक एकटा धारा मानल जाइत अछि।

निष्कर्ष

एहि आधारपर कहल सकैत छी जे राजकमल मार्क्सक अर्थ सिद्धान्तसँ कम प्रभावित बुझना जाइत छथि, वस्तुतरू ओ फ्रायडक कामसँ बेसी प्रभावित–अनुप्राणित छथि। हिनक रचना सभमे भोगल यथार्थके ँ महत्त्वपूर्ण स्थान भेटल अछि जे गिंसवर्गसँ प्रभावित बुझना जाइत अछि। राजकमलक अपन रचनाक माध्यमे आधुनिक कालक साहित्यकारके ँ एकटा नव बाट देखौलनि। हिनक असामयिक निधनसँ हिनक साहित्य रचना पूर्ण नहि भऽ सकलनि जकर चर्चा ओ अपन अन्तिम समयक लेखनमे कयने छथि– 'हमर कविता काँचे रहि गेल', मुदा हिनक जते रचना उपलब्ध अछि ताहिसँ मैथिली काव्य–धाराक प्रवाहके ँ एकटा नव दिशा अवश्य भेटल अछि। राजकमल नवताक पक्षधर छलाह। स्वातंत्र्योत्तर काल बोधके ँ समर्थ रूपे अभिव्यक्त करबा लेल, जीवनक जटीलो पक्षके ँ सहज संवेदना बनयबा लेल ओ विषय–वस्तुक उपस्थापनक नव रीतिक आवश्यकता बुझैत छलाह। इएह कारण थिक जे ओ अपन पूर्ववर्ती कथाकारक शिल्प विधानक अनुशरण नहि कयलनि। अपितु अपन स्वतंत्र आ चमत्कारिक रीतिक अनुसंधान कयलनि।

संदर्भ सूची

1. इतिहास दर्पण, डा० वीणा ठाकुर, प्रकाशक– श्री रामरतन झा, दरभंगा, 2008, पृ.– 171
2. ललका पाग, राजकमल चौधरी, प्रकाशक– द्यिापति परिषद्, सिन्दरी, 2008, पृ०– 8
3. समीक्षा लोक, डा० नबोनाथ झा, आशा प्रकाशन, कटहलवाड़ी, दरभंगा, 2007, पृ०– 100
4. प्रयोजन, डा० इन्दिरा झा, स्वाति प्रकाशन, पटना, 2008, पृ०– 73
5. तत्रैव, पृ०– 73
6. हमरा लोकनि युग आ आधुनिक मैथिली कविता, प्रकाशक– मैथिली लेखक संघ, जून– 2009, पृ०– 6
7. कारखाना, रमेश नीलकमल : तारानन्द, प्रकाशक– संजय प्रकाशन, पटना, भाग–2, पृ०– 31
8. हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक मैथिली कविता : राजकमल, मिथिला मिहिर, अगस्त– 1965, पृ०– 11
9. समवेत, मैथिली लेखक संघ, जून 2019, पृ०– 5